डॉ० शैलेन्द्र मोहन मिश्र
स० प्रा० मैथिली विभाग
सी०एम० जे० कॉलेज
दोनवारी हाट खुटौना
मो० न० 9546743796, 9434306082
Email- mishrasm966@gmail.com
B. A. III

भाषाक आकृतिमूलक वर्गीकरण

¡¡. योगात्मक भाषा :-

योगात्मक वर्गक भाषामे कोनो प्रकारक योग अवश्य होइत अछि। ई योग दू प्रकारक तत्वक होइत अछि - (क) अर्थ तत्व (ख) सम्बन्ध तत्व। अर्थ तत्व अर्थात मूल शब्द आ सम्बन्ध तत्व अर्थात रूप तत्व। एहि प्रकारेँ प्रकृति आ प्रत्ययक योग सँ शब्द सभक रचना होइत अछि। अतएव एकरा योगात्मक कहल जाइत अछि। एहिमे शब्दक स्वतंत्र अस्तित्व नहि छैक। ओ प्रत्यय विभक्ति आदि सँ संयुक्त भए वाक्यमे प्रयुक्त होइत अछि। विश्वक सभसँ बेसी भाषा योगात्मक अछि। योगक आकृतिक अनुसार एहि वर्गक भाषा केँ तीन वर्गमे बाँटल जा सकैत अछि :-

(क) अश्लिष्ट योगात्मक -

एहिमे शब्दक रूप प्रत्यय सभसँ बनैत अछि आ दुनू एक सीमा धरि परस्पर चिपकल प्रतीत होइत अछि। मुदा मूल शब्द आ प्रत्यय सदिखन अपन अस्तित्व फराके रखैत अछि ओकरा मिललाक बादो स्पष्टतः फराक - फराक देखल जा सकैत अछि। एहिमे प्रत्यय मूल शब्दसँ फराक कएल जा सकैत अछि आ ओकरा स्वतंत्र शब्द बुझल जा सकैत छैक। अतएव अश्लिष्ट योगात्मक भाषाकेँ प्रत्यय प्रधान भाषा कहल जाइत छैक। एहिमे सम्बन्ध तत्व (प्रत्यय) अर्थ तत्व सँ ' तिल तंडुल ' संयोग सदृश मिलल रहैत अछि। एहि प्रकारक भाषाक सर्वोत्कृष्ट उदाहरण तुर्की अछि। एतए शब्दमे अवयव सभक योग अत्यंत सुंदर छैक,

यथा -

एव = घर (एकवचन)
एव - लेर = कतेको घर (बहुवचन)
एव - देन = घर सँ
एव - इम - देन = हमरा घर सँ

अश्लिष्ट योगात्मक भाषाक कोनो भाषा वैज्ञानिक 6 भेद त कोनो भाषा वैज्ञानिक 5 भेद मानैत छथि। मुदा हम चारि टा भेद मानैत छी :-

1. पूर्व योगात्मक भाषा -

एहि वर्गक भाषा सभमे प्रत्यय, प्रकृतिक पूर्वमे जुटैत अछि। एहि हेतु एकर दोसर नाम तुर - प्रत्यय प्रधान सेहो देल गेल छैक। प्रत्ययक स्थान पर उपसर्ग लगैत अछि। अफ्रीकाक बाँटू भाषामे ई प्रवृत्ति पाओल जाइत छैक। एहि परिवारक जुलु आ काफ़िर भाषाक उदाहरण द्रष्टव्य अछि :-

जुलु भाषा -

उमुन्तु = एक टा लोक
अबन्तु = कतेको लोक
उमु = एकवचनक चिह्न

अब = बहुवचनक चिह्न

2. मध्य योगात्मक भाषा -

एहिमे सम्बन्ध तत्व मध्यमे जुटैत अछि । एहि भाषा सभमे शब्द प्रायः दू अक्षरक होइत छैक । एकर उदाहरण भारतक भाषा सभक संग संग हिन्द महासागर सँ अफ्रीका धरिक पसरल द्वीप सभक भाषा सभ अछि । मुण्डा वंशक संथाली भाषामे एकर उदाहरण भेटैत अछि , यथा - मंझि = मुखिया । एहि मे प बहुवचनक चिह्न थिक । अतः बहुवचन बनेबाक हेतु मंझिक मध्यमे प जुटि गेला सँ मपंझिक अर्थ मुखिया सभ भए जाइत अछि ।

3. अन्त योगात्मक भाषा -

एहि वर्गक भाषामे योगक क्रिया शब्दक अंतमे सम्पन्न होइत छैक । एकरे दोसर शब्द मे इहो कहल जा सकैत छैक जे एहि वर्गक भाषामे प्रत्ययक योग अंतमे रहैत छैक । भारतक द्रविड़ भाषा सभ तथा यूराल - अलटाइक परिवारक भाषा सभ एहि वर्गक अंतर्गत अबैत अछि , यथा -

हंगरीक भाषा मे - जार = बन्द करब
जारत = बन्द करबैत अछि
कन्नड़ - सेवक (बहुवचन)
कर्ता - सेवक - रु
कर्म - सेवक - रन्नू
करण - सेवक - रिन्द ।

उपर्युक्त विवरण सँ ज्ञात होइत अछि जे शब्दक अंतमे रचना तत्व जोड़ि देला सँ अर्थ बदलि जाइत छैक ।

4. पूर्वान्त योगात्मक -

एहि वर्गक भाषामे प्रत्यय प्रकृतिक पहिने तथा प्रकृतिक बाद मे दुनू मे लगैत अछि । न्यूगिनी द्वीपक मफोर भाषा एहि परिवारक अछि । उदाहरणार्थ द्रष्टव्य थिक -

मन्फ = सुनब
ज + मन्फ + उ = जन्मफउ = हम तोरा सुनैत छियौक।

(ख) प्रश्लिष्ट योगात्मक -

एहि वर्गक भाषा सभमे अर्थ तत्वक आ रचना तत्व एहन मिश्रण भए जाइत अछि जे ओकरा फराक करब संभव नहि होइछ - जेना संस्कृत ऋज सँ आर्तव वा शिशु सँ शैशव अर्थ तत्व तथा सम्बन्ध तत्वक अभेद योग भए गेल छैक । एहि वर्गक भाषाकेँ समास प्रधान भाषा सेहो कहल जाइत छैक । एकर कारण ई छैक जे एहिमे अनेक अर्थ तत्वक समासक प्रक्रियासँ योग भए सकैछ , यथा- संस्कृत मे जिगमिषटिक अर्थ होइछ ओ जाय जाइत अछि ।

एकर दू भेद अछि :-

¡. पूर्णतः समास - प्रधान ।
¡¡. अंशतः समास - प्रधान ।

¡. पूर्णतः समास प्रधान -

एहिमे सम्बन्ध तत्व तथा अर्थ तत्वक योग एतेक पूर्ण रहैत अछि जे शब्द सभक संयोग सँ बनाओल एक नम्हर शब्द पूर्ण वाक्य बनि जाइत अछि । एहि हेतु एकरा किछु भाषा वैज्ञानिक पूर्ण प्रश्लिष्ट योगात्मक भाषा सेहो कहैत छथि । एकरा मे वाक्य एक शब्दक सदृश प्रयुक्त होइत अछि , यथा - उत्तरी अमेरिकाक चेरी भाषामे ' नाघोलिनिन ' क अर्थ हमरा लग नाव लाउ । एहिमे नातेन , आमोखोल आ निन तीन शब्दक योग सँ वाक्य बनल अछि ।

¡¡. अंशतः समास प्रधान -

एहि मे अंशतः समास प्रधान होइत अछि । किएक त एहिमे सर्वनाम तथा क्रियाक मेलमे क्रिया लुप्त भए सर्वनामक द्योतक भए जाइत अछि, यथा - वास्क भाषामे दकारकिआतेक अर्थ अछि हम एकरा ओकरा लग जाइत छियैक ।

(ग) श्लिष्ट योगात्मक -

एहि भाषामे सम्बन्ध तत्वक योग सँ अर्थ तत्व किछु विकृति भए जाइत अछि , मुदा सम्बन्ध तत्वक पहचान फराके सँ बुझि पड़ैत छैक , यथा - संस्कृत मे वेद , नीति , देह , देव , भूत , भूगोल मे इक प्रत्ययक योग सँ क्रमशः वैदिक , नैतिक , दैहिक , भौतिक , भौगोलिक आदि शब्द बनैत अछि । एतए रचना तत्व इक क योग सँ अर्थ मे परिवर्तन भए गेल छैक , मुदा अर्थ तत्व आ रचना तत्व कैं पहचानबा मे कोनो कठिनाई नहि होइत अछि ।

एहि वर्गक भाषा संसार मे सभसँ उन्नति पर अछि। सामी , हामी आ भारोपीय परिवार एहि विभागक अंतर्गत अबैत अछि ।

श्लिष्ट योगात्मकक दू गोट भेद अछि :-

¡. अंतर्मुखी श्लिष्ट योगात्मक -

अंतर्मुखी श्लिष्ट भाषा सभमे जोड़ल गेल अंश अर्थ तत्वक मध्यमे घुलि मिलि कैं रहैत अछि । अरबी भाषामे सम्बन्ध तत्व स्वर होइत अछि जे व्यंजन सभक संग घुलि मिलि कैं रहैत अछि। क् - त् - व् (लिखब) अंतर्मुखी विभक्ति लगाए कैं किताब , कातिब , कुतुब शब्द बनैत अछि । एहि अंतर्मुखी श्लिष्ट भाषाक दू अवस्था दृष्टिगोचर होइत अछि - (क) संयोगात्मक यथा - अरबी (ख) वियोगात्मक यथा - हिब्रू ।

¡¡. बहिर्मुखी श्लिष्ट योगात्मक -

एहि मे विभक्ति तथा प्रत्यय मूल भाग (अर्थ - तत्व) क बाद अबैत अछि , यथा - संस्कृत मे गम धातु सँ गच्छ + उ + अन्ति = गच्छन्ति।
भारोपीय भाषा एहि वर्गमे अबैत अछि । एकरो दू गोट भेद छैक :-
(क) संयोगात्मक - एहिमे सम्बन्ध तत्व मूलरूप मे विद्यमान रहैत छैक । भारोपीय परिवारक ग्रीक , लैटिन, संस्कृत आदि एहि वर्गक अछि ।

(ख) वियोगात्मक - आधुनिक भारतीय भाषा वियोगात्मक भए गेल अछि । एहि वर्गमे अंग्रेजी , हिंदी, बंगला आ मैथिली आदि अबैत अछि ।

एतावता ज्ञात होइत अछि जे आकृतिमूलक वर्गीकरणक सर्वप्रथम उपयोगिता ई अछि जे एहि सँ भाषा सभक रचना बुझबा मे बहुत सहायता भेटैत अछि एहि सँ इहो बुझएमे अबैत छैक जे भाषा संयोगात्मक सँ वियोगात्मकक दिस बढ़ैत अछि आ पूर्णतः वियोगात्मक भए गेलापर फेर संयोगात्मक भए जाइत अछि ।

आकृतिमूलक वर्गीकरण रूप विश्लेषण पर आधारित अछि । अतएव एकर महत्व स्वयं सिद्ध अछि । एकर अतिरिक्त भाषा विकास क्रम सेहो एहिसँ स्पष्ट भए जाइत अछि ।